उत्तर संख्या - 012

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

अबुल फजल के ग्रन्थ आइन-ए-अकबरी से मुगलकालीन जमींदारी प्रथा का पता चलता है। जमींदार प्रायः समृद्ध व्यक्ति था। तत्कालीन समाज में ब्राह्मण राजपूत गठबन्धन का वर्चस्व था।

स्रोत

↓

साहित्यिक स्रोत

↓

आइन-ए-अकबरी

लेखक- अबुल फजल

मुगलकालीन भारत में जमींदारी व्यवस्था

1- **जमींदार समृद्ध व्यक्ति:-** जमींदार प्रायः समृद्ध व्यक्ति हुआ करता था उसकी व्यक्तिगत जमीन मिल्कियत होती थी। जिस पर उसका अधिकार था।

2- **राजस्व वसूलने का अधिकार:-** जमींदार को राजस्व वसूलने का अधिकार राजा द्वारा प्राप्त था।

3. **राजस्व वसूलने के बदले आय की प्राप्ति:-**

जमीदार को राजस्व वसूलने के बदले आय की प्राप्ति होती थी। इससे उसको निश्चित आय प्राप्त होने लगी।

4. **सरदेशमुखी तथा चौथ नामक कर वसूलने का अधिकार:-**

जमीदार को सरदेशमुखी तथा चौथ नामक कर वसलूने का अधिकार था।

5. **गाँवों में नियन्त्रण रखना:-**

जमीदारो का गाँवो पर पूर्ण नियन्त्रण बना रहता था। गाँव के किसान उसके नियन्त्रण मे कार्य करते थे।

6. **सैनिक रखने का अधिकार:-**

जमीदारो को सैनिक रखने का अधिकार था उसके पास सशस्त्र सैनिक होते थे।

8. **बाजार का आयोजन:-** जमीदार बाजार हाट का आयोजन करता था।

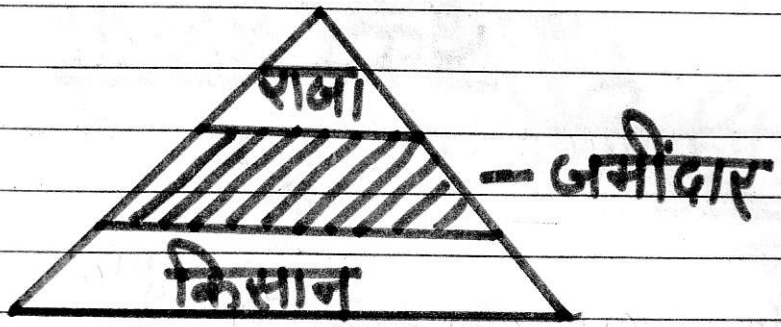

9- मुगल काल में जमींदारी व्यवस्था पिरामिड नुमा थी:-

मुगल काल में जमींदार पिरामिड नुमा व्यवस्था के मध्य में थे। वे राजा तथा किसानो के मध्य मध्यस्थ का कार्य करते थ

10- निष्कर्ष:- उपरोक्त बिन्दु एक वृहद जमींदारी व्यवस्था को प्रदर्शित करते हैं। मुगल काल में ग्राम प्रशासन में जमींदारो का बहुत योगदान था। वे राजा तथा किसान के मध्य मध्यस्थ बने रहते थे।

उत्तर संख्या - 13

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

मुगल काल की नींव बाबर (1526-1530) के द्वारा रखी गयी थी। तत्पश्चात पाँच शक्तिशाली शासकों ने शासन किया।

↓

मुगल काल में शासन की गतिविधियों के पुरुषों तक सीमित न होकर महिलाओं का भी शासन में अहम योगदान था।

↓

मुगल कालीन महिलाओं को उच्च स्थिति प्राप्त थी। वे तत्कालीन समस्त विभागों सम्बन्ध रखती थी।

मुगलकालीन प्रमुख महिलाएँ :-

मुगलकालीन प्रमुख महिलाओं के नाम चाँदबीबी, तारीबाई, जोधाबाई, नूरजहाँ रोशन आरा, जहाँआरा, गुलबदन बेगम आदि प्रमुख थी।

इसके अतिरिक्त कई महिलाएँ अपनी पहचान को प्रत्यक्ष नहीं रख उसको इसके विपरीत वे परदे के रूप में कार्य करती रही।

*- मुगलकालीन शाही परिवार की महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका:-

1- **शासिका के रूप में:-** मुगलकालीन महिलाओं ने शासन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई नूरजहाँ ने महिलाओं को शासन में रुचि तथा नियन्त्रण को बढ़ावा दिया उसके पश्चात् कई शासिका रही।

2- **वित्त पर नियन्त्रण:-** मुगलकालीन महिलाओं ने वित्त जैसे प्रमुख विभागों तक अपनी पहुँच बढ़ाई। रोशनआरा तथा जहाँआरा प्रमुख मनसबों पर आसीन थी। उन्होंने वार्षिक वेतन की प्राप्ति होती थी।
जहाँआरा को कई स्रोतों से वित्त की प्राप्ति होती थी

3- **वास्तुकला की डिजाइन तैयार करना:-**
शाहजहाँ ने अपनी राजधानी शाहजहाँनाबाद स्थापित की। वहाँ की कई वास्तुकला की डिजाइन जहाँआरा ने तैयार की।
दिल्ली की हृदयस्थल चाँदनी चौक की वास्तुकला जहाँआरा ने तैयार की।

4- **लेखिका के रूप में।** मुगलकालीन शाही परिवार की महिलाएं प्रमुख लेखिका भी थी। गुलबदनबेगम द्वारा रचित हुमायूंनामा प्रसिद्ध इतिवृत्ति है। गुलबदन बेगम बाबर की पुत्री तथा हुमायूं की बहन थी। वह कई भाषाओं को जानती थी

5- **निष्कर्ष।** उपरोक्त तथ्य स्पष्ट करते है कि मुगलकाल में महिलाएं उच्च पदो से लेकर वास्तुकार तथा लेखिका तक थी। शाही परिवार की महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ थी।

आधुनिक भारत

उत्तर संख्या - 14

रैय्यतवाड़ी बन्दोबस्त।-

रैय्यतवाड़ी बन्दोबस्त दक्षिण भारत में प्रचलित था। 1820 में रैय्यतवाड़ी बन्दोबस्त शुरू किया गया।

शुरुआत।- 1820 ई० में

स्थान।- दक्षिण भारत

कुल राजस्व का प्रतिशत।- 51% राजस्व की प्राप्ति

विशेषता।- जमीदार वर्ग का अभाव

उत्तर संख्या -15

महात्मा गाँधी द्वारा नमक को अन्य करों से अधिक दमनात्मक मानने के कारण

(i)- भोजन का अनिवार्य हिस्सा
(ii)- सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक
(iii)- नमक प्रकृति से प्राप्त निशुल्क उपहार
(iv)- नमक पर कर नहीं लगना चाहिए।

ब्रिटिश सरकार द्वारा नमक पूर कर लगाने से भारतीयों में रोष उत्पन्न हो गया। क्योंकि नमक जीवन जीने का एक अनिवार्य कारक है। तथा भोजन का प्रमुख तत्व।

"प्रतिनिधि नहीं तो कर नहीं।"
— महात्मा गाँधी

उत्तर संख्या :-16

सन् 1940 के प्रस्ताव के जरिए मुस्लिम लीग ने स्वयं के लिए एक अलग राष्ट्र की बात रखी। मुस्लिम लीग मुस्लिमों को भारत में अल्पसंख्यक मानती थी। इसलिए वह मुस्लिमों के लिए एक अलग राष्ट्र की बात कह रही थी।

अलग राष्ट्र की माँग सर्वप्रथम इकबाल ने उठाई।

उत्तर संख्या - 17

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

19 वी शताब्दी में ग्रामीण बंगाल में जोतदार एक ताकतवर हस्ती के रूप में सामने आया। जोतदार समृद्ध किसानों को कहा जाता था।

जोतदार के ताकतवर होने के कारण :-

जोतदार को एक ताकतवर हस्ती बनाने में कई कारकों का योगदान था

1- जोतदार समृद्ध व्यक्ति :-

बंगाल में जोतदार प्रायः समृद्ध व्यक्ति थे। उनके पास हजार एकड़ तक की भूमि होती थी। जिस पर कई भूमिहीन कृषक कार्य करते थे।

2- गाँवों पर नियन्त्रण :-

जोतदारों का गाँवों पर सीधा नियन्त्रण था। वह गाँव के कृषकों को अपनी खेती पर कार्य दिलवाता था।

3- व्यापारियों पर नियन्त्रण :-

जोतदार का गाँव के व्यापारियों पर पूर्ण नियन्त्रण था। क्योंकि जोतदार व्यापारियों को सदा सुविधा प्रदान करता था।

4 **राजस्व का विरोध करना**

जोतदार बढ़ी हुई राजस्व की माँग का विरोध करता था तथा कृषकों द्वारा राजस्व देने को मना करता था।

5. **किसानों पर नियन्त्रण:-** किसानों को अपनी भूमि पर कार्य के लिए रखकर वह किसानों पर सीधा नियन्त्रण स्थापित करता था।

6. **जमींदार की शक्तियाँ कम करना:-**

जोतदार ताकतवर तथा शक्तिशाली थे वे जमींदार का गाँव में विरोध करते थे।

निष्कर्ष:- उपरोक्त कारण जोतदार को ताकतवर हस्ती बनाने में सहायक भूमिका का निर्वहन कर रहे थे।

उत्तर संख्या - 18

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारत मे प्रथम सग्राम सन 1857 मे हुआ। इसने ब्रिटिश शासन की नीव हिला दी थी।

स्रोत

↓

साहित्यिक

↓

The first war of India Independence — 1957

1857 की क्रान्ति

तात्कालिक कारण

- चर्बी लगे कारतूस
- हड्डियों का चूरा
- भविष्यवाणी
- अफवाहें
- आटे मे हड्डियो का चूरा

अन्य कारण

- रा० कारण
- आ० कारण
- सा० कारण
- धार्मिक कारण

धार्मिक कारण

1857 की क्रान्ति मे धार्मिक कारणों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया

1. **ईसाई धर्म का प्रसार:-** अंग्रेजो द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार किया जा रहा था। जो भारतीयो मे रोष का प्रमुख कारण बना। उनकी धार्मिक भावनाओ को आघात पहुँचा।

2- **तिलक लगाने पर रोक:-** हिन्दुओं को तिलक लगाने से रोका गया। तिलक हिन्दुओ की धार्मिक स्थिति का प्रतीक है।

3- **चमड़ी वाली टोपी पहनने का आदेश देना:-** हिन्दू तथा मुस्लिम सैनिको को चमड़ी वाली टोपी पहनने के आदेश दिए गए। मुस्लिम चमड़े को अपवित्र मानते है।

4- **दाड़ी काटने पर रोक:-** मुस्लिमों को दाड़ी काटने के आदेश दिए गए। जिससे मुस्लिम सैनिक अंग्रेजो के खिलाफ हो गए।

5- **समुद्र पार सैनिकों को भेजना:-** भारत में मान्यता थी कि समुद्र पार जाने से धर्म भ्रष्ट हो जाता है। इसलिए सैनिको को समुद्र पार भेजा गया।

6- **उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम:-** ईसाई बनने वाला का पैतृक सम्पत्ति पर पूरा अधिकार बना रहेगा। जो रोष का प्रमुख कारण था।

उत्तर संख्या -19

औपनिवेशिक शहरों में सामाजिक सम्बन्ध का बदलना! -

1- **यातायात का विकास:-** यातायात के साधनों का विकास होने से लोगों को यात्रा करने मे सुगमता हुई। और लोगों के मध्य सामाजिक सम्बन्ध मे परिवर्तन आया।

2- **मध्यम वर्ग का उदय:-** समाज में पढ़े लिखे एक मध्यम वर्ग का उदय हुआ। जिसमे वकील, शिक्षक, चिकित्सक, व्यापारी आदि प्रमुख थे।

3- **महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन:-**

महिलाओं की स्थिति मे परिवर्तन आया। वे चारदीवारी से बाहर निकलने लगी।

4- **मनोरंजन के नवीन साधनो का विकास**

मनोरंजन के प्राचीन साधनों के स्थान पर नवीन साधनों का विकास हुआ। और इससे सामाजिक जीवन तथा सम्बन्ध बदलने लगे।

उत्तर संख्या - 20

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रारम्भ में महात्मा गाँधी जी अंग्रेजो पर विश्वास करते थे लेकिन जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड, पंजाब में मार्शल-ला ने ब्रिटिश सरकार से उनका विश्वास उठा लिया।

1920 में महात्मा गाँधी जी ने आन्दोलन प्रारम्भ करने को कहा तथा यह असहयोग आन्दोलन था अर्थात् सहयोग न देना।

आन्दोलन का प्रारम्भ होना

महात्मा गाँधी जी द्वारा 1920 को असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया गया।

असहयोग आन्दोलन

- रचनात्मक कार्य
- नकारात्मक कार्य

1- **नकारात्मक कार्य:-**

नकारात्मक कार्यों का वर्णन निम्नानुसार

(i)- **उपाधियों तथा पदों का अन्त:-**

सभी कांग्रेसी नेताओं ने उपाधियों तथा अपने पदों का त्याग कर दिया। केसर-ए-हिन्द उपाधि का त्याग महात्मा गांधी द्वारा

(ii)- **सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार:-**

सभी सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार किया गया। छात्र-छात्राओं ने इसमें सहयोग प्रदान किया।

(iii)- **सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार:-**

सभी सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार किया गया।

(iv)- **चुनावों का बहिष्कार:-** विधायिका के चुनावों का बहिष्कार किया गया।

(v)- **विदेशों में नौकरी का बहिष्कार:-**

विदेशों में भारतीयों द्वारा की जाने वाली नौकरी का बहिष्कार

रचनात्मक कार्य

निम्न प्रकार है

(i). **स्वदेशी को प्रोत्साहन:-** स्वदेशी को प्रोत्साहन प्रदान करना। स्वदेशी कपड़ा तथा अन्य वस्तु

(ii) **स्वदेशी विद्यालयों की स्थापना:-** स्वदेशी विद्यालयों की स्थापना भारतीयों द्वारा की गई।

(iii) **स्वदेशी न्यायालयों की स्थापना:-** स्वदेशी न्यायालयों तथा पंचायतों की स्थापना की गई।

आन्दोलन का महत्व:-

(i)- **सभी वर्ग सम्मिलित:-** सभी वर्गों ने इसमें सहयोग दिया।

(ii)- **कांग्रेस का विस्तार:-** कांग्रेस का विस्तार पूरे देश में हुआ।

(iii)- **राष्ट्रीयता का विकास:-** राष्ट्रीयता को प्रोत्साहन

आन्दोलन स्थगित

22 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के चौरा चौरी की घटना के पश्चात आन्दोलन स्थगित कर दिया गया।

उत्तरसंख्या - 2

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सन् 1946 के कैबिनेट मिशन के तहत भारत मे संविधान का निर्माण किया गया।

संविधान।- संविधान लिखित दस्तावेज होता है जिसमे कानूनो का संग्रह किया गया हो।

भारतीय संविधान के निर्माणकर्त्ता।-

पं० जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, महात्मा गांधी, अम्बेडकर, हंसा मेहता ए० एन. पोकर, धुलेकर

सदस्य- 389

292 सदस्य - ब्रिटिश भारत से निर्वाचित
93 सदस्य - रजवाड़ो से
04 सदस्य - चीफ कमीश्नर

ऐतिहासिक वाकते।-

(i)- **मध्यम वर्ग का उदय: -** मध्यम वर्ग में शिक्षक डॉक्टर, वकील का उदय हुआ।

2- **अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार!-** अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने लोगों को एक नई दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

3- **महिलाओं के आन्दोलन!-** महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए कई आन्दोलन हुए। इसमें भारतीय नायकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभा

4- **अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा!-** अल्पसंख्यकों के हितों को सुरक्षित करने के लिए उन्हें विशेष अधिकार प्रदान किए गए।

5- **जनजाति को अधिकार!-** जनजातियों को अधिकार प्रदान करने पर चर्चा हुए तथा उन्हें कुछ विशेष सुविधा तथा अधिकार प्रदान किए गए।

6- **दलित जाति!-** दलित जातियों का मुद्दा प्रमुख मुद्दे के रूप में सामने आया। जो समाज से हाशिये पर खड़ी थी।

7- **समाज का पिछड़ा वर्ग!-** समाज के पिछड़े वर्ग को आगे लाने के लिए कई सुधार किए गए तथा नियम-कानून बनाए गए

उत्तर संख्या - 22

प्रमुख बौद्ध स्थान:-

उत्तर प्रदेश - सारनाथ - प्रथम उपदेश
(ग) कुशीनगर - निर्वाण -
मध्य प्रदेश - साँची का स्तूप
आन्ध्र प्रदेश - अमरावती का स्तूप
बिहार - बोधगया - ज्ञान की प्राप्ति